९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

1

न्यायाधीश आपके पक्ष में है।

2

कहा जाता है कि इंग्लैण्ड के राजाओं में से एक जेम्स प्रथम ने एक बार न्यायधीश बनने का प्रयास किया। उसने सावधानीपूर्वक मुकद्दमें के एक पक्ष को सुना। वह फैसला करने ही वाला था कि उसने मुकद्दमें के दूसरे पक्ष को भी सुना। फिर पूरी तरह उलझता गया और यह नहीं जानता था कि क्या करे। लोग जिन्हें वह पहले निर्दोष समझता था अब दोषी लग रहे थे। लोग जिन्हें वह दोषी समझता था अब निर्दोष लग रहे थे। अंत में निराश होकर उसने न्यायधीश पद लेने से इंकार कर दिया।

किंग जेम्स प्रथम ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया कि मैं केवल एक पक्ष को ही भली प्रकार सुन सकता था, किन्तु जब मैंने दोनो ही पक्षों को सुन लिया, मैं नहीं जानता कौन सही है। एक उलझे हुए न्यायधीश को सही फैसला करने में परेशानी होती है।

परमेश्वर एक निष्पक्ष, पूरी तरह न्याययुक्त और यर्थात न्यायी है। जब हमारा न्याय करता है वह किसी भी दशा में भ्रमित नहीं होता है।

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

3

(दृश्य)

बाइबिल हमें सिखाती है कि हम में से प्रत्येक के विरुद्ध परमेश्वर के समक्ष एक मुकद्दमा है।

4

(दृश्य)

अभी भी, हमें अदालत में बुलाया जा रहा है कि हम उस अदालत में उपस्थित होकर अपने जीवन और कार्यों का लेखा दें।

प्रत्येक स्त्री और पुरुष जो कभी जीवित थे उनका मुकद्दमा विश्व की सर्वोच्च अदालत में परमेश्वर के न्याय के कटघरे में विचाराधीन है।

पौलुस प्रेरित उस निर्धारित न्याय के विषय में बताता है जिसका पूरे संसार को सामना करना ही है:

5

(मूलपाठ : प्रेरितों के काम १७ : ३१)

"उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह जगत का न्याय करेगा।"

प्रेरित के काम १७ : ३१

किसी को भी छूट नहीं मिलेगी कोई भी अदालत के बुलावे से बच नहीं सकता। बाइबिल स्पष्टता से कहती है कि प्रत्येक को उपस्थित होना पड़ेगा :

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

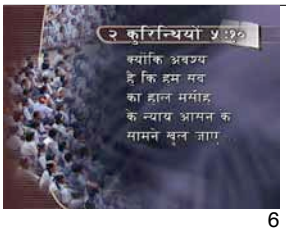

6

(मूलपाठ : २. कुरिन्थियों ५ : १०)

"क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए ----"

२ कुरिन्थियों ५ : १०

7

चाहे हम विश्वास करें या न करें।

चाहें हम पसन्द करें या न करें।

चाहें हम मसीही होने का दावा करें या न करें।

हम जो भी हों हम सब को उपस्थित होना ही है।

परमेश्वर के यहाँ कोई पक्षपात नहीं जब हमें स्वर्ग की अदालत बुलाएगी हमें उपस्थित होना ही है। क्यों?

पौलुस उत्तर देता है :

8

(मूलपाठ : रोमियो १४ : १२)

"इसलिए हम में से प्रत्येक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।"

रोमियो १४ : १२

9

स्वर्गीय अदालत का फैसला प्रत्येक मनुष्य के भाग्य को सदैव के लिए निर्धारित कर देगा और फैसला कभी न बदलने वाला होगा, क्योंकि उससे ऊँची कोई और अदालत अपील के लिए नहीं है !

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

10

(दृश्य)

परन्तु निर्णय लेने या सजा सुनाने से पहले जांच - पड़ताल होनी चाहिये। आइए बाईबिल की ओर मुड़ें और स्वर्ग में इस जांच - पड़ताल के दृश्य पर ध्यान दें।

- दानिय्येल भविष्यवक्ता लिखता है :

11

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : ९, १०)

"मेरे देखते - देखते सिंहासन रखे गये और कोई अति प्राचीन विराजमान हुआ;

12

उसका वस्त्र हिम सा उजला था और उसके सिर के बाल निर्मल ऊन सरीखे थे।

13

उसका सिंहासन अग्निमय और उसके पहिए धधकती हुई आग के से थे;

14

"उसके सम्मुख से आग की धारा निकलकर बह रही थी।

15

हजारों हजार लोग उसकी सेवा टहल कर रहे थे;

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

16

और लाखों लोग उसके सामने खड़े थे। न्यायी बैठ गए और पुस्तकें खोली गई।"

दानिय्येल ७ : ९, १०

17

यहाँ दानिय्येल परमेश्वर पिता या अति प्राचीन को उसके अनन्त सिंहासन पर बैठे और असंख्य दूतों से घिरा दिखाता है।

अब ध्यान दें कि दानिय्येल ने अगले दर्शन में क्या देखा:

18

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १३)

"मैंने रात में स्वप्न में देखा, और देखो,

19

मनुष्य की सन्तान सा कोई आकाश के बादलों पर आ रहा था !

20

वह उस अति प्राचीन के पास पहुँचा और उसको वे उसके समीप लाये।"

दानिय्येल ७ : १३

१ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

21

यहां परमेश्वर का पुत्र अति प्राचीन के समक्ष खड़े हुए दिखाया गया है। बिल्कुल पृथ्वी के अदालती दृश्य के समान।

अति प्राचीन न्याय आसन पर विराजमान है गवाह है स्वर्गदूत जिन्होंने सबकुछ देखा और लिखा और सिंहासन के सामने मनुष्य का वकील यीशु खड़ा है, जैसा यूहन्ना ने लिखा:

22

(मूलपाठ : १ यूहन्ना २ : १)

"पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह।"

१ यूहन्ना २ : १

23

(दृश्य)

अच्छा, आप कहेंगे प्रत्येक वहां उपस्थित है केवल उसे छोड़कर जिसकी जांच होती है अपने में यह सत्य है, लेकिन आइए देखें बाइबिल क्या कहती है :

24

(मूलपाठ : दानिय्येल ७ : १०)

"न्यायी बैठ गये और पुस्तकें खोली गयीं।"

दानिय्येल ७ : १०

प्रत्यक्ष रुप से इन पुस्तकों में जिनकी जांच होती है, उनके जीवन का लेखा है क्योंकि सुलेमान ने लिखा:

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

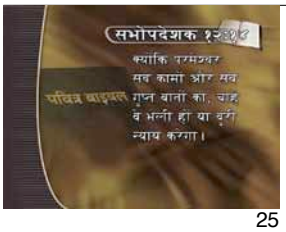

25

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : १४)

"क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहें वे भली हों या बुरी न्याय करेगा।"

सभोपदेशक १२ : १४

26

(मूलपाठ : मलाकी ३ : १६)

मलाकी जोड़ता है : "तब यहोवा का भय मानने वालों ने आपस में बातें की और यहोवा ध्यान पूर्वक उनकी सुनता था;

27

जो यहोवा का भय मानते और उसके नाम का सम्मान करते थे, उनके स्मरण के निमित्त उसके सामने एक पुस्तक लिखी जाती थी।"

मलाकी ३ : १६, नया किंग जेम्स अनुवाद

परमेश्वर हर समय हमारा ध्यान रखता है जब हमारे हृदय उसकी ओर होते हैं। दूसरों को उत्साहित करने वाला हमारा प्रत्येक शब्द और दया का कार्य परमेश्वर लिख देता है। राजा दाऊद भी लेखे - जोखे के बारे में जानता था क्योंकि उस ने कहा :

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

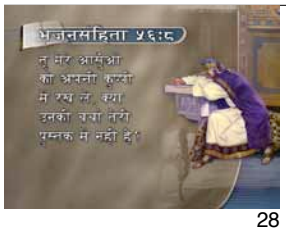

28

(मूलपाठ : भजनसंहिता ५६ : ८)

"तू मेरे आसुँओं को अपनी कुप्पी में रख ले, क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है?"

भजनसंहिता ५६ : ८

परमेश्वर आपके जीवन के सर्वाधिक गहरे दु:ख को भी जानता है।

वास्तव में, परमेश्वर हमारे बारे में सब कुछ जानता है, क्योंकि दाऊद ने भी लिखा :

29

(मूलपाठ : भजनसंहिता १३९ : १, ३, १६)

"हे यहोवा तू ने मुझे जांच कर जान लिया है।

30

"तू मेरी पूरी चाल -चलन का भेद जानता है।"

31

----और मेरे सब अंग जो दिन - दिन बनते जाते थे वे रचे जाने से पहिले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।"

भजनसंहिता १३९ : १, ३, १६

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

32

जबकि परमेश्वर हमारे विषय में सब कुछ जानता है, लेख प्रमाण रखना उसके लिए लाभदायक आवश्यक नहीं है लेख प्रमाण विश्व के लाभ के लिए रखे गए हैं कि प्रत्येक मुकद्दमें में परमेश्वर के प्रेम और न्याय का स्पष्ट प्रमाण हो ।

परमेश्वर के प्रति हमारी जवाबदेही एक गंभीर विचार है।

33

हर एक को सर्वाधिक बहुमूल्य उपहार जीवन का लेखा देना है! सुलेमान यही कह रहा था जब उसने लिखा:

34

(मूलपाठ : सभोपदेशक ११ : ९)

"हे युवक अपने लड़कपन में आनन्द कर और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह;

35

अपनी मनमानी कर और अपनी आंखों की अभिलाषा के अनुसार चल;

36

परन्तु यह जान ले कि इन सब बातों के विषय में परमेश्वर तेरा न्याय करेगा।"

सभोपदेशक ११ : ९

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

37

(मूलपाठ : मत्ती १२ : ३६, ३७)

मत्ती ने लिखा : "कि जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।"

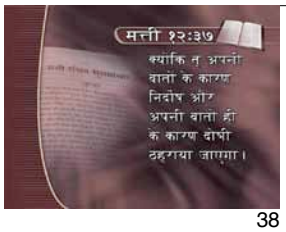

38

"क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा।"

मत्ती १२ : ३६, ३७

39

किसी ने आकंलन किया है कि औसतन एक व्यक्ति एक सप्ताह में इतने शब्द बोलता है कि ३२० पृष्ठ की एक पुस्तक भर जाएगी !

६० वर्षों में यह ३००० ऐसी पुस्तकों से अधिक हो सकता है !

40

न्याय के समय आपकी पुस्तकालय के पास कहने के लिए क्या होगा? इतना ही नहीं, उन शब्दों के पीछे उद्देश्य और कार्य भी प्रकाश में लाये जायेंगे:

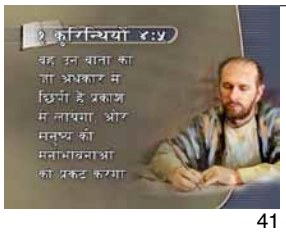

41

(मूलपाठ : १.कुरिन्थियों ४ : ५)

"वह उन बातों को जो अंधकार में छिपी हैं प्रकाश में लायेगा, और मनुष्य की मनोभावनाओं को प्रकट करेगा।"

१ कुरिन्थियों ४ : ५

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

42

उस दिन न तो कुछ मिटाया जाएगा और न छिपाया जाएगा !

मनुष्य अपने मित्रों और यहां तक कि अपने परिवारों को मूर्ख बनाने में सफल हो सकते हैं। परन्तु परमेश्वर को कोई भी मूर्ख नहीं बना सकता। वह मनोभावों को पढ़ता है !

43

आप जानते हैं, जब हमारे न्याय का दिन आएगा हम स्वयं को दो में से एक स्थिति में पाएंगे : या तो हमारी बीती हुई असफलताएँ यीशु के लहू से ढकी जा चुकी होगी या हमारा लेख प्रमाण हमें दोषी ठहराने के लिए खड़ा होगा और वास्तव में, यह नहीं कि हम क्या दावा करते हैं, किन्तु हम क्या करते हैं, इससे अन्तर पड़ता है!

44

(मूलपाठ : मत्ती १६ : २७)

हमें बताया गया है कि जब यीशु आयेगा, " वह प्रत्येक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।"

मत्ती १६ : २७

हमारे भले काम नहीं किन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमारे उद्धार का कारण है। परन्तु हमारे भले काम प्रकट करते हैं कि हमारे हृदय परमेश्वर को समर्पित हैं।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

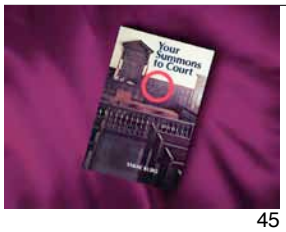

45

अब शायद आप कह रहे होंगें "यदि हमारा उद्धार अनुग्रह से है, तो हमारा न्याय हमारे कामों के अनुसार क्यों है?"

वह एक अच्छा प्रश्न है! डॉक्टर साकी कूबो ने अभी हाल ही में लिखा था:

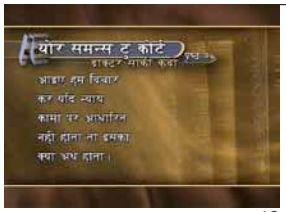

46

"आइए हम विचार करें यदि न्याय कामों पर आधारित नहीं होता तो इसका क्या अर्थ होता।

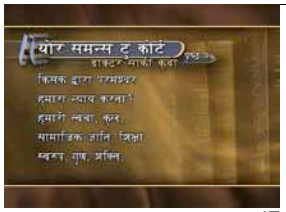

47

किसके द्वारा परमेश्वर हमारा न्याय करता? हमारी त्वचा, कुल, सामाजिक जाति, शिक्षा, स्वरुप, गुण, शक्ति,

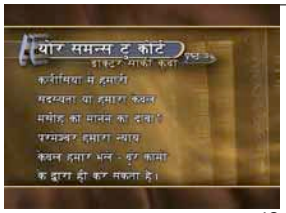

48

कलीसिया में हमारी सदस्यता या हमारा केवल मसीह को मानने का दावा? परमेश्वर हमारा न्याय केवल हमारे कामों, अच्छे या बुरे के द्वारा कर सकता है।"

योर समन्स टु कोर्ट, पृष्ठ २० । भले काम निश्चय ही सच्चे लोगों द्वारा नहीं किये जाते हैं

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

49

(दृश्य)

परमेश्वर और मनुष्य के लिए प्रेम से भरे हृदय के परिणाम अपने -आप हो जाते हैं। यीशु के साथ प्रेम सम्बन्ध ही उसके भक्तों को भले कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं। सभोपदेशक की पुस्तक में निष्कर्ष निकालते हुए सुलेमान ने कहा:

50

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : १३, १४)

"जब सब कुछ सुन लिया गया, निष्कर्ष यह है :

51

परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।

52

"क्योंकि परमेश्वर प्रत्येक बात का न्याय करेगा।"

सभोपदेशक १२ : १३, १४

क्योकि मसीह के साथ मनुष्य के सम्बन्ध का न्याय उसके व्यवहार से होना है तो उस व्यवहार को मापने के लिए कोई स्पष्ट मापदण्ड होना ही चाहिए।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

53

पृथ्वी पर हमारी न्याय प्रक्रिया में अदालती जांच का सामान्य उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है क्या अपराध किया गया है क्या एक कानून तोड़ा गया है। केवल तब ही जब कानून का उल्लंघन हुआ है, एक आदमी दोषी पाया जा सकता है।

54

परमेश्वर के न्याय में एक कानून या मापदण्ड है, और याकूब स्पष्ट करता है कि कौन सा कानून ऊपर लगाया जायेगा।

55

(मूलपाठ : याकूब २ : १२)
"तुम उन लोगों की भांति बोलो और काम करो जिनका न्याय स्वतन्त्रता की व्यवस्था के अनुसार होगा।"
याकूब २ : १२

56

(मूलपाठ : याकूब २ : ११)
पिछले पद में याकूब आज्ञाओं में से दो का जिक्र करता है। "व्यभिचार न करना और हत्या न करना।"
इसलिए परमेश्वर की दस आज्ञाओं की व्यवस्था ही स्वतन्त्रता की व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य के जीवन का न्याय किया जाएगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

57

(दृश्य)

न्याय केवल यह निश्चय करेगा कि मसीह और शैतान के बीच महान विवाद में हम किस ओर हैं।

क्या हम मसीह के साथ हैं?

क्या हमने उसे अपने में जीने दिया है?

58

क्या हमारे दिलों में उसके और उसकी इच्छा के प्रति, जो दस आज्ञाओं में व्यक्त की गयी है, असीम प्रेम है? क्या उसकी शक्ति द्वारा उसकी इच्छा का पालन करने की हमारी इच्छा है? क्या हम ने उस की व्यवस्था को अपने हृदय में लिखा है?

59

आप जानते हैं जब देशान्तर में बसने वाले एक देश के नागरिक होने की इच्छा करते हैं उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे उस देश के प्रति भक्ति की शपथ लें, वफादार नागरिक बनने और उस देश के कानून का पालन करने का वचन दें।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

60

(दृश्य)

ठीक ऐसा ही मसीहियों के साथ भी है। जब वे मसीह को स्वीकार करते और उसके राज्य के नागरिक बनने की इच्छा करते हैं। परमेश्वर उनसे कहता है कि वे परमेश्वर के प्रति अपने

प्रेम और भक्ति की शपथ लें और उसके शासन की व्यवस्था का पालन करें।

61

यदि देशान्तर में रहने वाले सब अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति वफादार नहीं रहते।

कुछ बाहरी रुप से उस देश के भक्त नागरिक लगते हैं किन्तु बाद में विनाशक पाये जाते हैं।

जब यह प्रमाणित हो जाता है तब नागरिकता समाप्त करके उसे देश से निकाल दिया जाता है।

62

इसी प्रकार सब मसीही अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति विश्वस्त नहीं रहते। अभी धर्मी घोषित होना ही पर्याप्त नहीं है हमें उसके प्रति उसके आने तक विश्वस्त रहना है।

मसीह को मानने का दावा करना पर्याप्त नहीं है। हमें यीशु की आज्ञाकारिता और विश्वस्तता से पूर्ण सिद्ध जीवन को जीना होगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

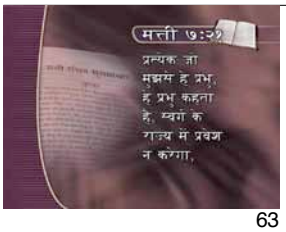

63

(मूलपाठ : मत्ती ७ : २१)

यीशु ने कहा "प्रत्येक जो मुझसे हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा,

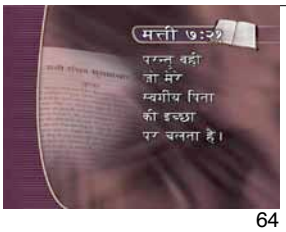

64

परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

मत्ती ७ : २१

भले और बुरे मसीह और शैतान के बीच पूरा संघर्ष परमेश्वर के प्रेममय चरित्र के विषय हैं।

65

और व्यवस्था चरित्र का लिखित मापदण्ड है।

आश्चर्य न होगा जब यह अन्तिम न्याय में मुख्य रूप से उभरेंगे!

66

किन्तु सर्वाधिक चौंकाने वाला तथ्य जिसके बारे में मसीहियों का बहुत थोड़ा ज्ञान है कि स्वर्गीय अदालत अभी चल रही है!

वास्तव में, प्रकाशितवाक्य बाइबिल की अन्तिम पुस्तक प्रकट करती है कि परमेश्वर का न्याय अभी चल रहा है।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

67

इसीलिए प्रकाशितवाक्य के अंत में यूहन्ना संसार की अन्तिम चेतावनी और निमन्त्रण की रुपरेखा इन शब्दो में देता है:

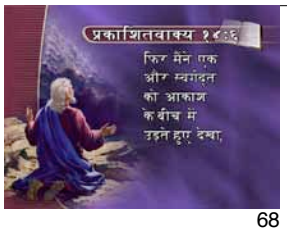

68

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ६, ७)
"फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा,

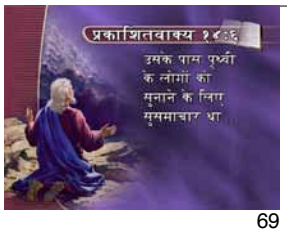

69

उसके पास पृथ्वी के लोगों को सुनाने के लिए सुसमाचार था --

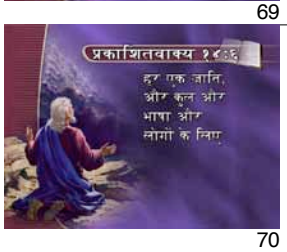

70

हर एक जाति, और कुल और भाषा और लोगों के लिए

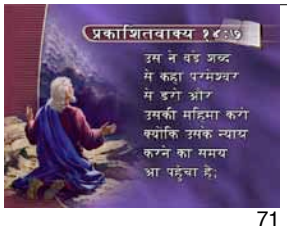

71

उस ने बड़े शब्द से कहा परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है;

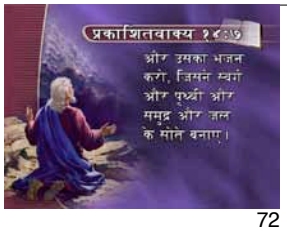

72

और उसका भजन करो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद और जल के सोते बनाए।"
प्रकाशितवाक्य १४ : ६, ७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

73

आप ध्यान देंगे कि यह संदेश यह नहीं कहता है कि न्याय करने का समय आने वाला है यह कहता है न्याय करने का समय आ पहुँचा है।"

74

इस तिगुणा संदेश का दूसरा भाग परमेश्वर के लोगों को झूठे धार्मिक सिद्धान्त से बाहर निकालने के लिए बुलाता है जो अंतिम दिनों में जीवित होंगे। इस अंतिम संदेश का अंतिम भाग दुनिया के लोगों को यह चेतावनी है कि प्रकाशितवाक्य १३ के पशु की शक्ति की उपासना से सावधान हो जाओ।

75

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०)
"जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले"

76

वह परमेश्वर के प्रकोप की निरी मदिरा पीएगा।"
प्रकाशितवाक्य १४ : ९, १०
अब, १४ और १५ पदों पर ध्यान दीजिए, जो तीन स्वर्गदूतों के संदेशों को उद्घोषित करते हैं:

77

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य १४ : १४, १५)
"और मैंने दृष्टि की ओर देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है,

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

78

जिसके सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है।"

79

फिर एक और स्वर्गदूत ने मंदिर में से निकल कर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकार कर कहा,

80

'अपना हंसुआ लगाकर लवनी कर क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है,

81

इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है।"
प्रकाशितवाक्य १४ : १४, १५

82

पृथ्वी की कटनी क्या है यह दुनिया का अन्त है कटनी मसीह के दूसरे आगमन को लक्ष्य करती है। यीशु के दूसरे आगमन के पूर्व क्या होगा? परमेश्वर के न्याय का समय। उसका न्याय यह बता देगा कि कौन उसके वापिस आने के लिए तैयार है। परन्तु हमें इस विषय की गहराई से जांच करने के लिए रूकना चाहिए। शायद आप यह सोच रहे होंगे कि यह न्याय कब आरंभ होगा?

83

दानिय्येल की पुस्तक में एक अत्यधिक याद करने योग्य भविष्यवाणी में कुंजी मिलती है!

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

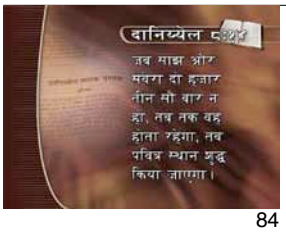

84

(मूलपाठ : दानिय्येल ८ : १४)

"जब सांझ और सवेरा दो हजार तीन सौ बार न हों, तब तक वह होता रहेगा, तब पवित्र स्थान शुद्ध किया जाएगा।"

दानिय्येल ८ : १४, किंग जेम्स अनुवाद

बाइबिल में यह सबसे लम्बे समय की भविष्यवाणी है।

85

(मूलपाठ : यहेजकेल ४ : ६)

भविष्यवाणी में हमने ध्यान दिया कि एक दिन एक वर्ष को दर्शाता है।

"मैंने एक वर्ष की संती एक दिन ठहराए हैं।"

यहेजकेल ४ : ६

इसी प्रकार २३०० दिन २३०० वर्ष को दर्शाता है।

86

दानिय्येल के अध्याय ७,८ और ९ में पाई जाने वाली २३०० वर्षो की भविष्यवाणी विस्तृत भविष्यवाणी का भाग है।

87

यह भविष्यवाणी हमारे प्रभु का बपतिस्मा और क्रूस पर बलिदान की एकदम सही दिनांक निश्चित करती है। यह इस बात को भी बताती है कि न्याय का समय कब आरम्भ होगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

88

ये २३०० भविष्यवाणी के दिन या यह २३०० वर्षों की अवधि राजा अरस्तु के यरुशलेम के पूर्णनिर्माण की आज्ञा से आरम्भ हुई। इस्राएली बाबुल में ७० वर्षों के लिए बंदी थे और वे अपने घर जाने और उनके प्रिय शहर को पुनः बनाने को बेचैन थे।

89

अन्त में सन् ४५७ ईसा पूर्व राजा ने लम्बे समय से की गई प्रतिज्ञाओं की राजाज्ञा निकाली। तेइस सौ वर्ष उस दिनांक से १८४४ ईसवी में समाप्त होते हैं।

आइए हम अपने पाठ में वापिस जाएं। जब तक दो हजार तीन सौ वर्ष या भविष्यवाणी के दिन या वास्तविक साल पूरे न हो लें, तब पवित्र स्थान शुद्ध किया जाएगा। हमने देखा कि यह भविष्यवाणी १८४४ में पूरी हुई पवित्र स्थान को शुद्ध करना क्या है?

90

१८४४ में बाइबिल जिसका वर्णन करती है जैसा कि परमेश्वर के न्याय का समय आरंभ हुआ। वह घड़ी आई। आप पूछ सकते हैं, किस प्रकार यह न्याय का समय पवित्र स्थान को शुद्ध करने से संबधित है जिसकी दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि ऐसा २३०० दिनों के अंत में होगा?

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

91

पवित्र स्थान को शुद्ध करना क्या है? इसका न्याय के समय के साथ क्या संबंध है? बाइबिल दो पवित्र स्थानों का वर्णन करती है एक पृथ्वी पर और दूसरा स्वर्ग में।

92

प्राचीन इस्राएल में, लोग प्रतिदिन अपने बलिदान पवित्र स्थान में लाते थे।

93

वहाँ वे अपने पापों को स्वीकार करते थे और एक मेम्ने का जीवन बलिदान करते थे जो कि भविष्य में होने वाली परमेश्वर के पुत्र यीशु की मृत्यु पर अपने विश्वास को दिखाते थे।

94

आज यदि हम पाप करते हैं, तो हम अपने पापों के लिए परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं क्योंकि यीशु हमारे पापों का मुल्य चुकाने के लिए हमारे बदले मरा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

95

किस प्रकार कलवरी से पहले लोगों के पास कोई बलिदान नहीं था जिसे वे पीछे देखते इसलिए विश्वास के द्वारा वे उस समय जब परमेश्वर का मेम्ना उनके लिए मरा उसकी अपेक्षा आगे की ओर देखते थे। एक निर्दोष पशु के बलिदान के कार्य के द्वारा वे उद्धारकर्त्ता में अपने विश्वास को स्वीकार करते थे जो उनके क्षमा प्राप्त करने को संभव बनाने के लिए आएगा और जान देगा।

96

तब उनके पाप प्रतिकात्मक रूप से पवित्र स्थान में याजक के द्वारा परम पवित्र स्थान के परदे के सामने याजक के पशु के रक्त के छिड़कने से स्थानान्तरित किए जाते थे।

97

तब प्रत्येक वर्ष में एक दिन, इस्राएल के लोग अत्यन्त पवित्र और विधिपूर्वक एक सभा बुलाते थे, जो अत्यंत प्रायश्चित या पवित्र स्थान को साफ करने का दिन कहलाती थी।

इस्राएल के लोगों के लिए यह न्याय का दिन होता था।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

98

प्रायश्चित के दिन के दस दिन पूर्व, तुरही फूंकी जाती थी, जो इस्राएलियों को याद दिलाती थी कि वे अपने पापों का प्रायश्चित करने और उन्हें स्वीकार करने के लिए अपने जीवन की सूची तैयार करले।

99

"क्योंकि उस दिन तुम्हें शुद्ध करने के लिए तुम्हारे निमित्त प्रायश्चित किया जाएगा,

100

और तुम अपने सब पापों से यहोवा के सम्मुख पवित्र ठहरोगे।"

लैव्यवस्था १६ : ३०

101

अब इब्रानियों की पुस्तक इसे स्पष्ट करती है कि पृथ्वी का पवित्र स्थान और उसकी सभा स्वर्ग के पवित्रस्थान का एक उदाहरण थी जहाँ मसीह हमारा महायाजक हमारे पापों को क्षमा करता है।

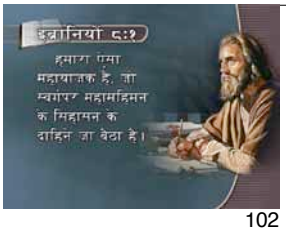

102

(मूलपाठ : इब्रानियों ८ : १,२)

पौलुस कहता है, "हमारा ऐसा महायाजक है, जो स्वर्गपर महामहिमन के सिंहासन के दाहिने जा बैठा है,

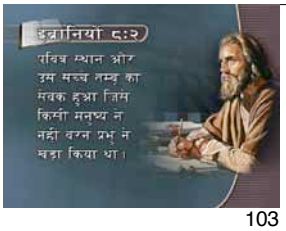

103

पवित्र स्थान और उस सच्चे तम्बू का सेवक हुआ, जिसे किसी मनुष्य ने नहीं वरन प्रभु ने खड़ा किया था।"

इब्रानियों ८ : १, २

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

104

(मूलपाठ : इब्रानियों ९ : ११, १२, २४)

फिर से : "परन्तु मसीह महायाजक होकर आया -----

105

अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया,

106

हमारे लिए प्रायश्चित द्वारा अनन्त पाप से मुक्ति प्राप्त किया ---

107

क्योंकि मसीह ने उस हाथ के बनाए हुए पवित्र स्थान में प्रवेश नहीं किया,

108

जो सच्चे पवित्र स्थान का नमूना हैं; पर स्वर्ग ही में प्रवेश किया,

109

ताकि हमारे लिए अब परमेश्वर के सामने दिखाई दे-------"

इब्रानियों ९ : ११, १२, २४

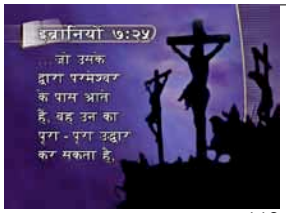

110

(मूलपाठ : इब्रानियों ७ : २५)

"-------जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उन का पूरा - पूरा उद्धार कर सकता है,

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

111

क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है।"

इब्रानियों ७ : २५

वास्तविक निवास स्थान या पवित्र स्थान स्वर्ग में है। जो कुछ पृथ्वी पर होता है वह सबकुछ उद्धार की योजना में जो कुछ होता है उसका नमूना है। यीशु वह मेम्ना है जो मरता है। यीशु वह याजक है जो जीवित है। यीशु हमारा महायाजक है जिस प्रकार इस्राएलियों का महायाजक साल में एक बार परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता था उसी प्रकार अन्त के समय में यीशु अपने न्याय के कार्य को सम्पन्न करने के लिए प्रवेश करेंगे।

112

(मुलपाठ : मत्ती १० : ३२, ३३)

न्याय के दिन, यह हमारा मसीह के साथ संबंध और व्यवहार है जो हमारे अनन्त जीवन को स्थिर करता है। मसीह हमें बचाना चाहता है। हमें बचाने के लिए जो भी वे कर सकते हैं वह कर रहे हैं। वह कहते हैं, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा,

113

उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के समाने मान लूंगा।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

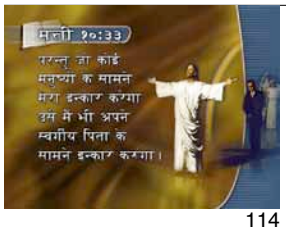

114

परन्तु जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूंगा।"

मत्ती १० : ३२, ३३

115

आप देखते हैं कि न्याय के दिन आप अकेले ही खड़े नहीं होंगे! यदि हमने यीशु मसीह को स्वीकार कर लिया है, तो वह भी हमें अपने पिता के सामने स्वीकार करेगें। यदि हम मसीह के हैं तो वह हमारा वकील है। यीशु के द्वारा हम परमेश्वर के सामने ऐसे खड़े होंगे जैसे कि हमने कभी पाप न किया हो।

116

हमारे अभिलेख केवल हमारे उद्धारकर्त्ता के प्यारे जीवन को दिखाएंगे और उसके सिद्ध जीवन का श्रेय हमें प्राप्त होगा। इसलिए, हे मित्रों, जो यीशु को अपने पूरे मन और आत्मा से प्रेम करते हैं और उसके पीछे चलते हैं उन्हें न्याय के दिन से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि यीशु अपने बहाए गए लहू को दिखाएगा कि उसने अंगीकार किए गए प्रत्येक पाप को ढक दिया क्योंकि यूहन्ना ने लिखा :

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

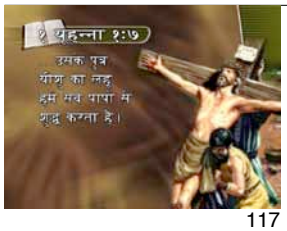

117

(मूलपाठ : १. यूहन्ना १ : ७)

"-----उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।"

१. यूहन्ना १ : ७

118

(दृश्य)

हम पृथ्वी के अंतिम समय में रह रहे हैं। १८४४ से स्वर्ग की अदालत में मसीह के आगमन के पूर्व न्याय के लिए बैठक बुलाई गई है।

119

(दृश्य)

इसमें कोई संदेह की बात नहीं है कि न्याय हाबिल से आरंभ हुआ, वह प्रथम धार्मिक व्यक्ति था जो पृथ्वी ग्रह पर मरा।

120

(मूलपाठ : १. पतरस ४ : १७)

पौलुस ने लिखा है : "क्योंकि वह समय आ पहुँचा है कि पहिले परमेश्वर के लोगों का न्याय किया जाए।"

१.पतरस ४ : १७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

121

अदालत में हम हाबिल के दिन को अपने मस्तिष्क की आँख से उसी तस्वीर को देख सकते हैं।
जिस प्रकार अदालत में उसका मामला आता है, परमेश्वर हाबिल के जीवन को देखता है और वहाँ परमेश्वर के मेम्ने की मृत्यु को उसके ग्रहण करने का अभिलेख है।

122

बाइबिल में अभिलेख किया गया हाबिल के अंतिम कार्यों में से एक कार्य वह बलिदान था जो उस ने चढ़ाया, जो कि आने वाले उद्धारकर्त्ता में उसके विश्वास को दर्शाता है। मसीह के लोहू के द्वारा उसके सभी पाप ढक दिए गए।

123

आप आश्वासित हो सकते हैं कि यीशु, हाबिल का वकील अपने कील से छिदे हुए हाथों को बढ़ाकर कहता है पिता, मेरे रक्त ने, हाबिल के अपराध को चुका दिया और क्या आपने उन अनगिनत स्वर्गदूतों को आनन्दित होते हुए नहीं सुना जब यीशु कहते है, "जीवन की पुस्तक में हाबिल का नाम लिखो! "
और उसका नाम अब भी वहाँ है!
जिस प्रकार मसीह ने प्रतिज्ञा की थी:

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

124

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य ३ : ५)

"जो जय पाए, उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहनाया जाएगा,

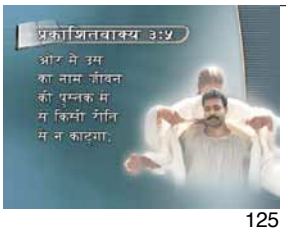

125

और मैं उस का नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूंगा;

126

पर उस का नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूंगा।"

प्रकाशितवाक्य ३ : ५

127

और इसमें कोई शंका की बात नहीं कि यहूदा का नाम भी स्वर्ग की अदालत में उठाया गया। यहूदा मसीह का अनुयायी था उसके शिष्यों में से एक।

वह पूर्णरूप से बुरा नहीं था, परन्तु उसका जीवन उसके रोजगार से मेल नहीं खाता था। वह मसीह को सर्वश्रेष्ठ जानकर प्रेम नहीं करता था।

128

कभी कभी वह मसीह की ओर खिंच जाता था, परन्तु उसकी एक कमजोरी दूसरी कमजोरी को बढ़ाती गई और अन्त में उसने सचमुच अपने

प्रभु को चांदी के तीन सिक्कों के लिए बेच दिया! तब दु:ख में उसने अपने आप को फांसी लगा ली!

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

129

यीशु यहूदा से प्रेम करते थे। यहाँ तक कि उसने अंतिम भोज की रात को झुककर यहुदा के धूलभरे पांव धोए। यीशु ने उस घमंडी हृदय को छूने की आशा की। वह न्याय के दिन उसके वकील के रूप में उसके साथ खड़ा होना चाहता था,

130

परन्तु यहूदा दूर चला गया। यीशु को यहूदा का नाम दुहराने में कितना दु:ख हुआ होगा। हमारी स्वयं की धार्मिकता न्याय के समय में काम नहीं आएगी:

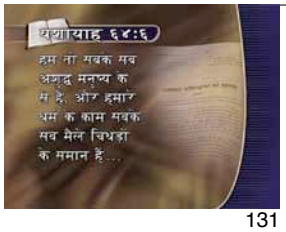

131

(मूलपाठ : यशायाह ६४ : ६)
"हम तो सबके सब अशुद्ध मनुष्य के से हैं, और हमारे धर्म के काम सबके सब मैले चिथड़ों के समान हैं------"
यशायाह ६४ : ६

132

वे लोग जो अपने जीवन में मसीह को प्रथम स्थान हमेशा देते हैं। केवल वे ही मसीह की धार्मिकता का पहिरावा पहन सकते हैं बिना उस पहिरावे के, कोई भी मनुष्य न्याय के दिन स्थिर नहीं रह सकेगा है।
इसलिए यहूदा का नाम जीवन की पुस्तक से काट डाला है।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

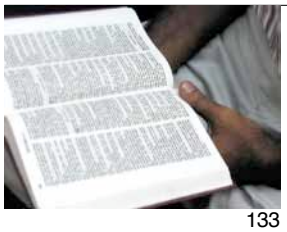
133

यह एक पवित्र समय है जिसमें हम रह रहे हैं। इस्राएलियों की तरह ही, हमें भी अपने जीवन की सूची बनाने की आवश्यकता है। हमें यीशु के साथ अपनी की गई प्रतिज्ञा को बनाए रखने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल इसी अदालत में हमें खड़े होने की एक संभावित तैयारी करनी है। शीघ्र ही मनुष्य का परीक्षा काल बन्द हो जाएगा और आज्ञा निकाली जाएगी:

134

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : ११)

"जो अन्याय करता है, वह अन्याय ही करता रहे---जो पवित्र है, वह पवित्र बना रहे।"

प्रकाशितवाक्य २२ : ११

उस समय में, परमेश्वर ने जो क्षमा और दया इतने लम्बे समय से मनुष्य को दी थी वह वापस ले ली जाएगी। मनुष्य की भाषा में सब से दु:खदायी शब्द उन सब के होंगे जिन्होने उद्धार को खो दिया है जिन्होंने मसीह को अपने प्रभु और वकील के रूप में ग्रहण नहीं किया है।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

135

(मूलपाठ : यिर्मयाह ८ : २०)

वे कहेंगे, "कटनी का समय बीत गया, फल तोड़ने की ऋतु भी समाप्त हो गई और हमारा उद्धार नहीं हुआ!"

यिर्मयाह ८ : २०

तब यीशु दुनिया में वापिस आएगा, जैसा हम पढ़ते हैं।

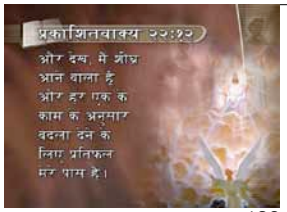

136

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १२)

"और देख, मैं शीघ्र आने वाला हूँ और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।"

प्रकाशितवाक्य २२ : १२

137

मित्र, न्याय के समय में यीशु आपका वकील बनने की अभिलाषा करते हैं। वह कलवरी पर उसके बलिदान को ग्रहण करने की आप से अभिलाषा करते है। वह अभिलाषा करते है कि आप उसके सामने अपने पापों को स्वीकार कर लें ताकि वह उन्हें मिटा सके। वह आपके नाम को जीवन की पुस्तक में लिखने की अभिलाषा करते है। यूहन्ना उन लोगों का वर्णन करता है जो उस नगर में प्रवेश करेंगे या नहीं करेंगे।

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

138

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २१ : २७)

"और उस में कोई अपवित्र वस्तु या घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़नेवाला , किसी रीति से प्रवेश न करेगा,

139

पर केवल वे लोग जिनके नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं।"

प्रकाशितवाक्य २१ : २७

९ - विश्वासपूर्वक न्याय का सामना करना

140

क्या आप इसी समय यीशु के लिए अपने हृदय के द्वार को खोलना पसन्द करेंगे? क्या आप उसे अपने जीवन में से उस वस्तु को निकालने के लिए कहेंगे जो उसके राज्य में आपके अस्तित्व को रहने देने के लिए स्वीकार नहीं करने देती? न्याय के समय में परमेश्वर हमारे विषय में सब कुछ बताता है। इस सम्पूर्ण विश्व में सब कुछ प्रकट किया जाएगा। हमारे सारे अभिलेख लेखाबद्ध है। हमारे सारे पापों को ढांकना चाहेंगे- यीशु के रक्त से ढके रहेंगें? क्या आप चाहेंगे कि मसीह आगे बढ़े और कहे, "हाँ यह पुरूष और महिला मेरे लोगों में से एक है। मैंने इनके पाप क्षमा कर दिए हैं। मैंने उनके पापों को मिटा दिया है। मैंने उनकी गलतियों को क्षमा कर दिया है। उनके पाप मेरे रक्त से ढ़क गए हैं। अभिलेख में से हमेशा के लिए मिटा दिए गए हैं। यीशु स्वर्ग के सिंहासन पर खड़ा है। वहाँ न्याय के समय आप के उद्धारकर्त्ता के रूप में खड़ा है। इसी समय इसी क्षण! क्या आप उनके पास आएंगे? क्या आप उनको अपना पूरा जीवन देंगे? क्यों नहीं आप अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाएं जब हम प्रार्थना करें और कहें, "हाँ प्रभु! मेरा जीवन ले लीजिए मैं आपका होना चाहता हूँ।